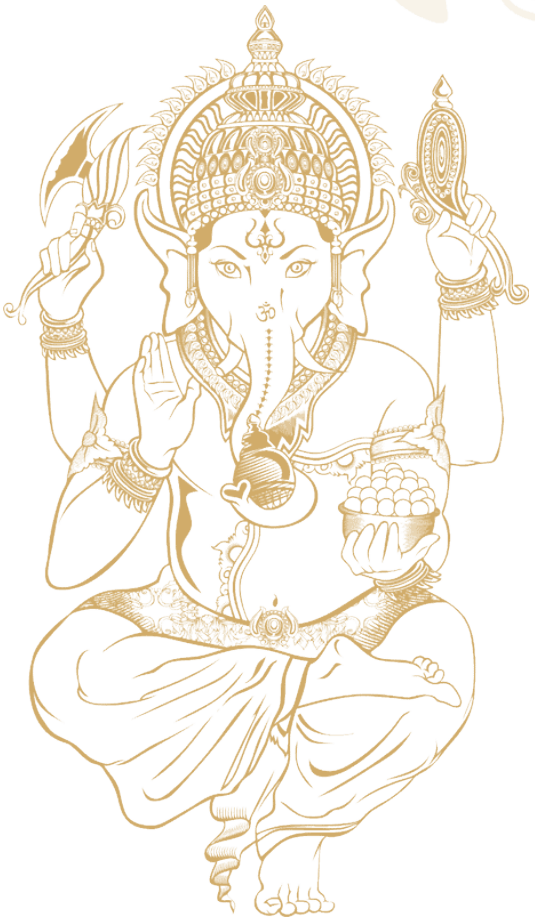

???? ???? (????? ??????????)

26 Nov 2025

12:54 AM

Sanawad

Model: Web-MyKundli

Order No: 120351701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**25-26/11/2025**
दिन	मंगल-बुधवार
जन्म समय	**00:54:00 घंटे**
इष्ट	45:23:15 घटी
स्थान	**Sanawad**
देश	India

अक्षांश	22:11:00 उत्तर
रेखांश	76:04:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:25:44 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	00:28:16 घंटे
वेलान्तर	00:13:01 घंटे
साम्पातिक काल	04:48:13 घंटे
सूर्योदय	06:44:42 घंटे
सूर्यास्त	17:40:55 घंटे
दिनमान	10:56:13 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्य के अंश	09:33:50 वृश्चिक
लग्न के अंश	19:12:16 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**मकर - शनि**
नक्षत्र-चरण	**श्रवण - 1**
नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
योग	वृद्धि
करण	कौलव
गण	देव
योनि	वानर
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	खी-खिलावन
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	मार्गशीर्ष	5
पंजाबी	संवत : 2082	मार्गशीर्ष	11
बंगाली	सन् : 1432	मार्गशीर्ष	10
तमिल	संवत : 2082	कार्तिगई	11
केरल	कोल्लम : 1201	वृश्चिकम	10
नेपाली	संवत : 2082	मार्गशीर्ष	11
चैत्रादि	संवत : 2082	मार्गशीर्ष	शुक्ल 6
कार्तिकादि	संवत : 2082	मार्गशीर्ष	शुक्ल 6

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 5
तिथि समाप्ति काल _____: 22:57:16
जन्म तिथि _____: 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: उत्तराषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 23:57:32 घंटे
जन्म योग _____: श्रवण
सूर्योदय कालीन योग ____: गण्ड
योग समाप्ति काल _____: 12:49:29 घंटे
जन्म योग _____: वृद्धि
सूर्योदय कालीन करण ____: बव
करण समाप्ति काल _____: 10:13:06 घंटे
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 02:21:07
भभोग _____: 63:57:54
भोग्य दशा काल _____: चंद्र 9 वर्ष 7 मा 19 दि

घात चक्र

मास _____: वैशाख
तिथि _____: 4-9-14
दिन _____: मंगलवार
नक्षत्र _____: रोहिणी
योग _____: वैधृति
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: मूषक
लग्न _____: कुम्भ
सूर्य _____: कुम्भ
चन्द्र _____: सिंह
मंगल _____: मीन
बुध _____: धनु
गुरु _____: मेष
शुक्र _____: वृष
शनि _____: मकर
राहु _____: मिथुन

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

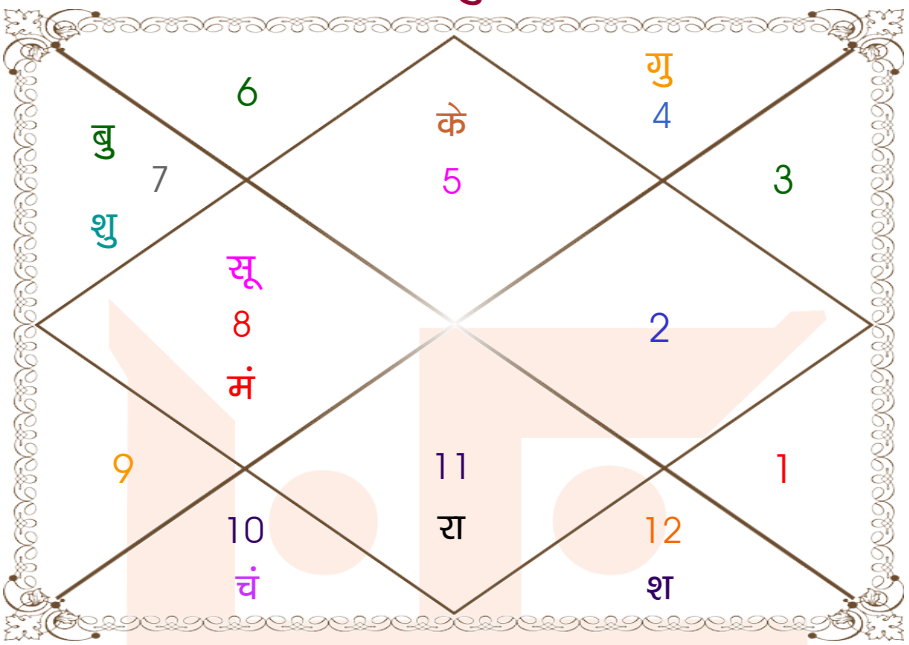

चन्द्र कुंडली

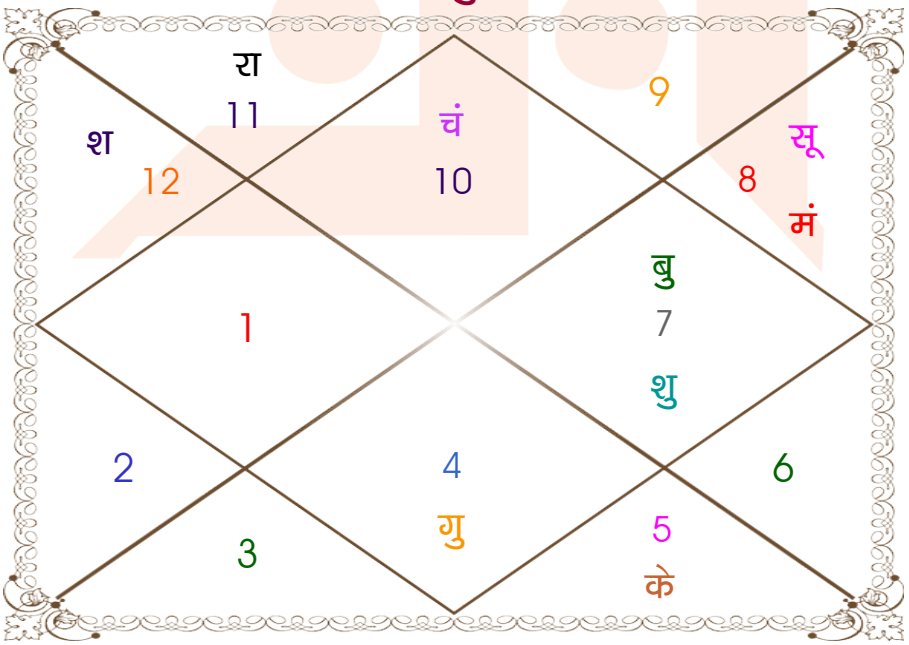

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

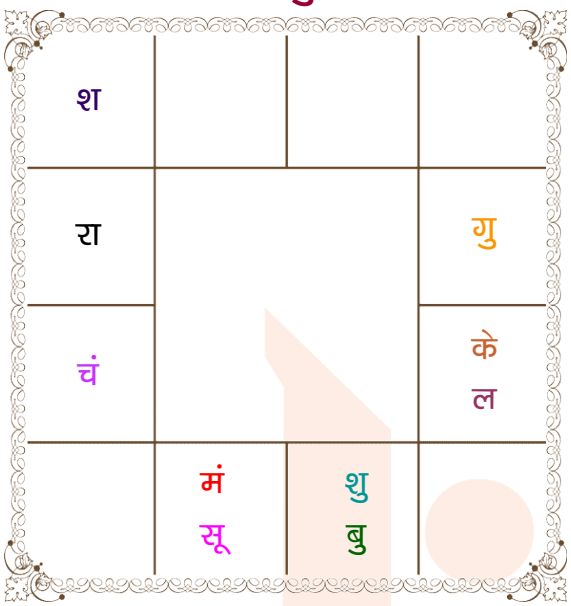

लग्न कुंडली

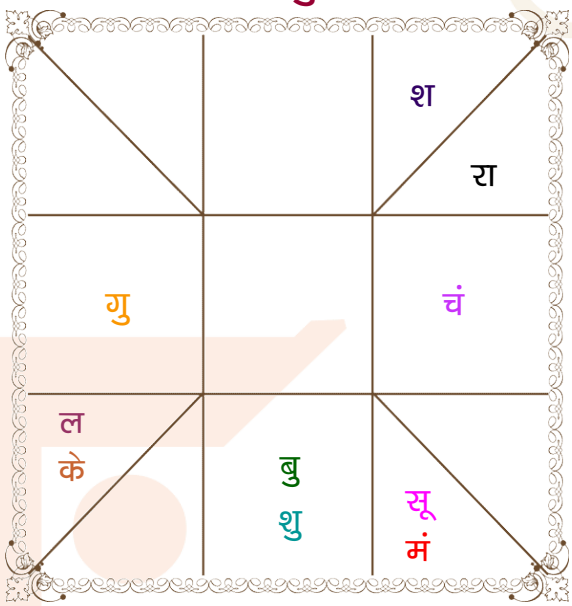

विंशोत्तरी
चन्द्र 9वर्ष 7मा 19दि

चन्द्र	
26/11/2025	
17/07/2145	
चन्द्र	16/07/2035
मंगल	16/07/2042
राहु	15/07/2060
गुरु	15/07/2076
शनि	16/07/2095
बुध	16/07/2112
केतु	17/07/2119
शुक्र	17/07/2139
सूर्य	17/07/2145

योगिनी
मंगला 0वर्ष 11मा 17दि

मंगला	
26/11/2025	
12/11/2026	
	26/11/2025
पिंगला	13/12/2025
धान्या	12/01/2026
भ्रामरी	22/02/2026
भद्रिका	13/04/2026
उल्का	13/06/2026
सिद्धा	23/08/2026
संकटा	12/11/2026

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	19:12:16	331:47:54	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	---
सूर्य			वृश्चि	09:33:50	01:00:42	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	मित्र राशि
चंद्र			मक	10:29:08	12:23:20	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	सम राशि
मंगल		अ	वृश्चि	21:14:12	00:44:13	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	स्वराशि
बुध	व		तुला	27:56:22	00:44:44	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
गुरु	व		कर्क	00:36:02	00:02:49	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	मंगल	उच्च राशि
शुक्र			तुला	29:27:07	01:15:24	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	चंद्र	स्वराशि
शनि	व		मीन	00:56:34	00:00:15	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	मंगल	सम राशि
राहु	व		कुंभ	20:11:09	00:04:21	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	20:11:09	00:04:21	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	05:02:47	00:02:30	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	---
नेप	व		मीन	05:12:49	00:00:30	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	---
प्लूटो			मक	07:34:33	00:01:10	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
दशम भाव			वृष	19:13:58	--	रोहिणी	--	4	शुक्र	चंद्र	बुध	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:12

लग्न-चलित

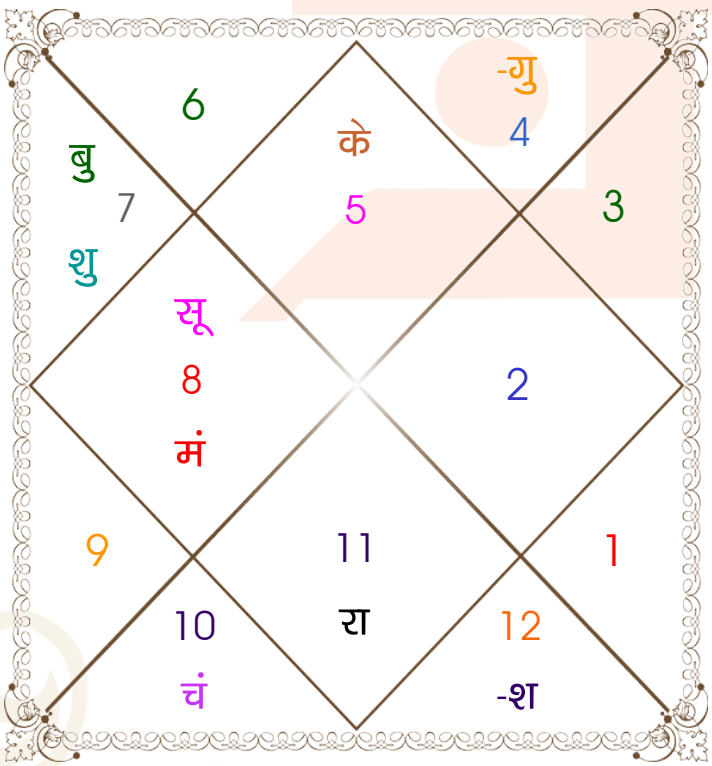

चन्द्र कुंडली

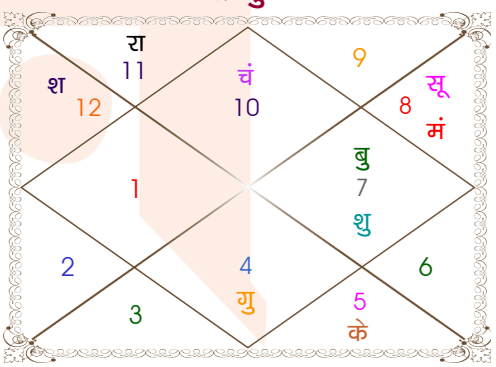

नवमांश कुंडली

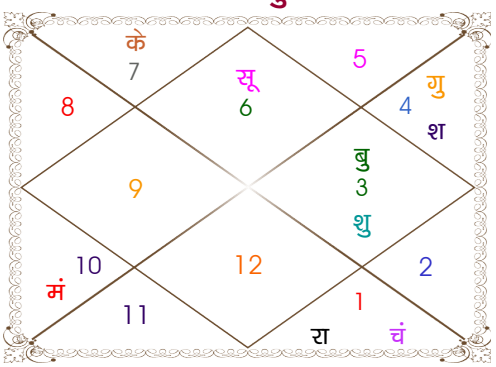

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	सिंह	04:12:33	सिंह	19:12:16
2	कन्या	04:12:33	कन्या	19:12:50
3	तुला	04:13:07	तुला	19:13:24
4	वृश्चिक	04:13:41	वृश्चिक	19:13:58
5	धनु	04:13:41	धनु	19:13:24
6	मकर	04:13:07	मकर	19:12:50
7	कुम्भ	04:12:33	कुम्भ	19:12:16
8	मीन	04:12:33	मीन	19:12:50
9	मेष	04:13:07	मेष	19:13:24
10	वृष	04:13:41	वृष	19:13:58
11	मिथुन	04:13:41	मिथुन	19:13:24
12	कर्क	04:13:07	कर्क	19:12:50

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	19:12:16
2	कन्या	17:30:59
3	तुला	18:06:37
4	वृश्चिक	19:13:58
5	धनु	19:53:47
6	मकर	20:00:46
7	कुम्भ	19:12:16
8	मीन	17:30:59
9	मेष	18:06:37
10	वृष	19:13:58
11	मिथुन	19:53:47
12	कर्क	20:00:46

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा

चलित कुंडली

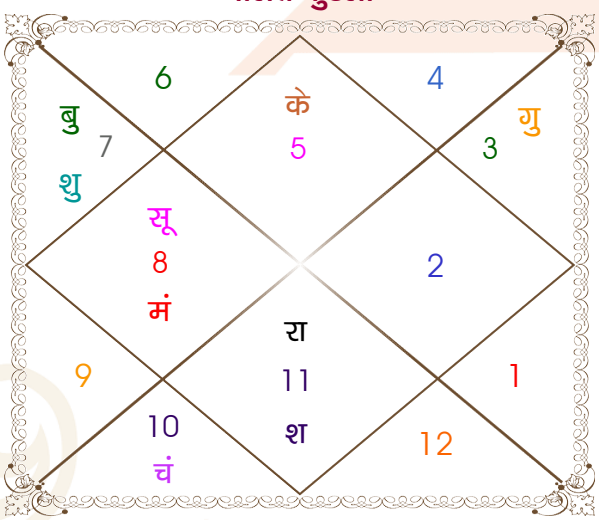

भाव कुंडली

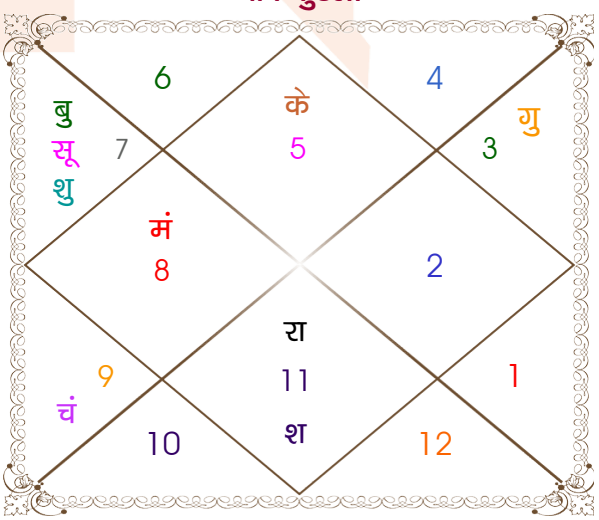

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 9 वर्ष 7 मास 19 दिन

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
26/11/2025		16/07/2035		16/07/2042		15/07/2060		15/07/2076	
16/07/2035		16/07/2042		15/07/2060		15/07/2076		16/07/2095	
चंद्र	16/05/2026	मंगल	12/12/2035	राहु	28/03/2045	गुरु	03/09/2062	शनि	19/07/2079
मंगल	15/12/2026	राहु	30/12/2036	गुरु	22/08/2047	शनि	16/03/2065	बुध	28/03/2082
राहु	15/06/2028	गुरु	06/12/2037	शनि	28/06/2050	बुध	22/06/2067	केतु	07/05/2083
गुरु	15/10/2029	शनि	14/01/2039	बुध	14/01/2053	केतु	28/05/2068	शुक्र	07/07/2086
शनि	16/05/2031	बुध	12/01/2040	केतु	01/02/2054	शुक्र	27/01/2071	सूर्य	19/06/2087
बुध	15/10/2032	केतु	09/06/2040	शुक्र	01/02/2057	सूर्य	15/11/2071	चंद्र	17/01/2089
केतु	16/05/2033	शुक्र	09/08/2041	सूर्य	27/12/2057	चंद्र	16/03/2073	मंगल	26/02/2090
शुक्र	14/01/2035	सूर्य	15/12/2041	चंद्र	28/06/2059	मंगल	20/02/2074	राहु	02/01/2093
सूर्य	16/07/2035	चंद्र	16/07/2042	मंगल	15/07/2060	राहु	15/07/2076	गुरु	16/07/2095

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
16/07/2095		16/07/2112		17/07/2119		17/07/2139		17/07/2145	
16/07/2112		17/07/2119		17/07/2139		17/07/2145		00/00/0000	
बुध	12/12/2097	केतु	12/12/2112	शुक्र	16/11/2122	सूर्य	04/11/2139	चंद्र	27/11/2145
केतु	09/12/2098	शुक्र	12/02/2114	सूर्य	16/11/2123	चंद्र	04/05/2140		00/00/0000
शुक्र	10/10/2101	सूर्य	19/06/2114	चंद्र	17/07/2125	मंगल	09/09/2140		00/00/0000
सूर्य	16/08/2102	चंद्र	18/01/2115	मंगल	16/09/2126	राहु	04/08/2141		00/00/0000
चंद्र	16/01/2104	मंगल	17/06/2115	राहु	15/09/2129	गुरु	23/05/2142		00/00/0000
मंगल	12/01/2105	राहु	04/07/2116	गुरु	16/05/2132	शनि	05/05/2143		00/00/0000
राहु	01/08/2107	गुरु	10/06/2117	शनि	17/07/2135	बुध	10/03/2144		00/00/0000
गुरु	06/11/2109	शनि	20/07/2118	बुध	17/05/2138	केतु	16/07/2144		00/00/0000
शनि	16/07/2112	बुध	17/07/2119	केतु	17/07/2139	शुक्र	17/07/2145		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 9 वर्ष 7 मा 18 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
26/11/2025		16/05/2026		15/12/2026		15/06/2028		15/10/2029	
16/05/2026		15/12/2026		15/06/2028		15/10/2029		16/05/2031	
	00/00/0000	मंगल	28/05/2026	राहु	07/03/2027	गुरु	19/08/2028	शनि	14/01/2030
	00/00/0000	राहु	29/06/2026	गुरु	19/05/2027	शनि	04/11/2028	बुध	06/04/2030
	00/00/0000	गुरु	28/07/2026	शनि	14/08/2027	बुध	12/01/2029	केतु	10/05/2030
	26/11/2025	शनि	30/08/2026	बुध	31/10/2027	केतु	09/02/2029	शुक्र	14/08/2030
शनि	09/01/2026	बुध	30/09/2026	केतु	02/12/2027	शुक्र	01/05/2029	सूर्य	12/09/2030
बुध	21/02/2026	केतु	12/10/2026	शुक्र	02/03/2028	सूर्य	26/05/2029	चंद्र	31/10/2030
केतु	11/03/2026	शुक्र	17/11/2026	सूर्य	29/03/2028	चंद्र	05/07/2029	मंगल	03/12/2030
शुक्र	01/05/2026	सूर्य	27/11/2026	चंद्र	14/05/2028	मंगल	03/08/2029	राहु	28/02/2031
सूर्य	16/05/2026	चंद्र	15/12/2026	मंगल	15/06/2028	राहु	15/10/2029	गुरु	16/05/2031

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
16/05/2031		15/10/2032		16/05/2033		14/01/2035		16/07/2035	
15/10/2032		16/05/2033		14/01/2035		16/07/2035		12/12/2035	
बुध	28/07/2031	केतु	27/10/2032	शुक्र	25/08/2033	सूर्य	24/01/2035	मंगल	25/07/2035
केतु	28/08/2031	शुक्र	02/12/2032	सूर्य	25/09/2033	चंद्र	08/02/2035	राहु	16/08/2035
शुक्र	22/11/2031	सूर्य	12/12/2032	चंद्र	14/11/2033	मंगल	18/02/2035	गुरु	05/09/2035
सूर्य	18/12/2031	चंद्र	30/12/2032	मंगल	20/12/2033	राहु	18/03/2035	शनि	29/09/2035
चंद्र	30/01/2032	मंगल	11/01/2033	राहु	21/03/2034	गुरु	11/04/2035	बुध	20/10/2035
मंगल	29/02/2032	राहु	12/02/2033	गुरु	10/06/2034	शनि	10/05/2035	केतु	28/10/2035
राहु	17/05/2032	गुरु	13/03/2033	शनि	15/09/2034	बुध	05/06/2035	शुक्र	22/11/2035
गुरु	25/07/2032	शनि	15/04/2033	बुध	10/12/2034	केतु	16/06/2035	सूर्य	30/11/2035
शनि	15/10/2032	बुध	16/05/2033	केतु	14/01/2035	शुक्र	16/07/2035	चंद्र	12/12/2035

मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
12/12/2035		30/12/2036		06/12/2037		14/01/2039		12/01/2040	
30/12/2036		06/12/2037		14/01/2039		12/01/2040		09/06/2040	
राहु	08/02/2036	गुरु	13/02/2037	शनि	08/02/2038	बुध	07/03/2039	केतु	20/01/2040
गुरु	30/03/2036	शनि	08/04/2037	बुध	06/04/2038	केतु	28/03/2039	शुक्र	14/02/2040
शनि	30/05/2036	बुध	26/05/2037	केतु	30/04/2038	शुक्र	27/05/2039	सूर्य	22/02/2040
बुध	23/07/2036	केतु	15/06/2037	शुक्र	06/07/2038	सूर्य	14/06/2039	चंद्र	05/03/2040
केतु	14/08/2036	शुक्र	11/08/2037	सूर्य	26/07/2038	चंद्र	15/07/2039	मंगल	14/03/2040
शुक्र	17/10/2036	सूर्य	28/08/2037	चंद्र	29/08/2038	मंगल	05/08/2039	राहु	05/04/2040
सूर्य	05/11/2036	चंद्र	26/09/2037	मंगल	22/09/2038	राहु	28/09/2039	गुरु	25/04/2040
चंद्र	07/12/2036	मंगल	15/10/2037	राहु	21/11/2038	गुरु	15/11/2039	शनि	19/05/2040
मंगल	30/12/2036	राहु	06/12/2037	गुरु	14/01/2039	शनि	12/01/2040	बुध	09/06/2040

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	1
मित्र अंक	1, 2, 8
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	कन्या, तुला
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	नृसिंह
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	93%	सुख, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	92%	सुख, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	73%	स्वास्थ्य, सुख
पन्ना	बुध	67%	पराक्रम, धनार्जन, धन
हीरा	शुक्र	67%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	50%	कम खर्च, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
गोमेद	राहु	25%	दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना
मोती	चंद्र	0%	शत्रु व रोग, व्यय
नीलम	शनि	0%	दुर्घटना, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट

रत्न की शुभता

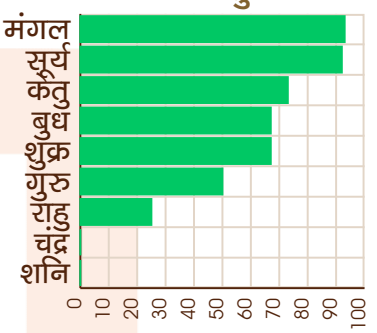

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	16/07/2035	98%	25%	93%	73%	50%	67%	0%	0%	61%
मंगल	16/07/2042	98%	12%	100%	55%	56%	67%	0%	0%	80%
राहु	15/07/2060	80%	0%	81%	67%	50%	73%	0%	50%	61%
गुरु	15/07/2076	98%	12%	100%	55%	62%	54%	0%	25%	73%
शनि	16/07/2095	80%	0%	81%	73%	50%	73%	0%	38%	61%
बुध	16/07/2112	98%	0%	93%	80%	50%	73%	0%	25%	73%
केतु	17/07/2119	80%	0%	100%	67%	50%	73%	0%	0%	86%
शुक्र	17/07/2139	80%	0%	93%	73%	50%	79%	0%	38%	80%
सूर्य	17/07/2145	100%	12%	100%	67%	56%	54%	0%	0%	61%

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------

तृतीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2108-29/07/2108	23/11/2108-17/02/2111	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/02/2111-02/05/2113	22/09/2113-26/01/2114	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	बदनामी
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सन्तति
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	दम्पति

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थित कुंडली में चतुर्थ भाव में है अतः आप मंगली दोष से युक्त हैं परन्तु शास्त्रों के नियमानुसार आपका मांगलिक दोष खत्म हो जाता है। अतः आपके जीवन में इस मंगली योग का शुभ प्रभाव पूर्ण रूप से विद्यमान रहेगा जिससे आप जीवन में समस्त प्रकार के सुख साधनों एवं ऐश्वर्य से युक्त रहेंगे आप पूर्ण रूपेण धनार्जन करके सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

शारीरिक रूप से आप स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रहेंगे। आपके विवाह में इस मंगल के प्रभाव से अल्प मात्रा में विलम्ब अवश्य हो सकता है। इससे कोई अशुभ परिणाम नहीं होगा फलतः विवाह अत्यन्त ही सुखद एवं हर्ष के वातावरण में सम्पन्न होगा। इसमें किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं या व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाह के पश्चात् यदा कदा अल्प मात्रा में आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित होगा लेकिन इससे कोई हानि नहीं होगी।

जन्म कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित मंगल के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे। मकान एवं जायदाद आदि का स्वामित्व भी आप प्राप्त करेंगे। जिससे आपका सांसारिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि होने से पत्नी का स्वास्थ्य यदा कदा मध्यम रहेगा परन्तु उसका कोई विशेष अशुभ प्रभाव नहीं होगा जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक दाम्पत्य सुख का उपभोग कर सकेंगे। चतुर्थ भाव से दशम भाव पर मंगल की दृष्टि आपके कार्य क्षेत्र को सुदृढ़ता प्रदान करेगी परिणामस्वरूप आप कोई उच्च पदाधिकारी या सम्मानित पद को प्राप्त करके समाज में पूर्ण मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। साथ ही एकादश भाव पर भी मंगल की दृष्टि से आपके आय साधनों में वृद्धि होगी तथा अपने पराक्रम एवं बुद्धि बल से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा जीवन में समस्त

भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त होकर आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगे इस प्रकार आपका सम्पूर्ण दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक शुभ एवं सुखद बनाने के लिए आप किसी भी गौर मांगलिक या जिसका मंगली दोष उचित नियम के अनुसार भंग हो रहा हो ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए। यदि कुंडली मिलान के समय आप इस बात का पूर्ण रूप से ध्यान रखेंगे तो आप का सम्पूर्ण दाम्पत्य जीवन सुखैश्वर्य सौभाग्य तथा धन सम्पत्ति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेगा तथा आप प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

इसके अतिरिक्त इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि कन्या की कुण्डली में भी मंगल चतुर्थ भाव में न हो क्यों कि समान भावों में स्थित मंगल जीवन में अनावश्यक समस्याएं तथा बाधाएं उत्पन्न करते हैं जिससे दाम्पत्य जीवन में कटुता उत्पन्न होती है। इससे आपको सुख संसाधनों की प्राप्ति तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता मान सम्मान एवं उन्नति में अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त अन्य भावों में स्थित मंगल यदि दोषमुक्त हो रहा हो तो दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होता है साथ ही आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी तथा किसी भी प्रकार का तनाव उत्पन्न नहीं होगा। अतः सुखी एवं आदर्श दाम्पत्य जीवन के लिए सावधानी पूर्वक विचार करके अन्तिम निष्कर्ष लेना चाहिए।

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्ययोगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रूचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरू, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभ्रातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराक्रमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :– चन्द्र
(26/11/2025 - 16/07/2035)

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 26/11/2025 को आरम्भ और 16/07/2035 को समाप्त होगी।

चन्द्र षष्ठम भाव में अवस्थित है और षष्ठम भाव रोग, बीमारी, रोजगार अधीनस्थ कर्मचारियों या सेवकों, ऋण, शत्रुओं मामा, कृपणता, तथा तीव्र व्यथा का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि औसत अवधि होगी और उदास, राहत, दुःख तथा समस्याओं की अवधि होगी और आप परिस्थिति के अनुसार इनके साथ समझौता करने का प्रयास करेंगे।

स्वास्थ्य :

आप किसी बड़े या छोटे रोग से ग्रसित नहीं होंगे, अपना सन्तुलन बनाए रहेंगे और समय सारणी के अनुसार और स्फूर्ति तथा सक्रियता के साथ अपने कार्यों का संपादन करेंगे। इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और शक्ति सामान्य रहेगी और आप अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ और संपत्ति :

दस वर्ष की इस अवधि में आप के मामा आपकी बहुत सहायता करेंगे औन उनकी सहायता के कारण आपकी संपत्ति में वृद्धि होगी और आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आप सुख-साधनों पर व्यय करेंगे और जीवन का भरपूर आनन्द उठाएंगे।

व्यवसाय :

आपका व्यावसायिक जीवन सुखी होगा। अगर नौकरी पेशा हैं तो जीवन में उन्नति के अनेक अवसर मिलेंगे और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो नये व्यवसाय के अवसर मिलेंगे जिसमें आप सफल होंगे। घाटे के अवसर भी आ सकते हैं। आपके मामा आपकी आपकी समस्याओं के समय बहुत सहायता करेंगे। आपके मामा अपने जीवन में बहुत तरक्की करेंगे और आपके परिवार की सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक व सहयोगी होंगे जिससे आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण होगा। किन्तु विषादपूर्ण मुद्रा और स्वभाव के कारण कभी-कभी समस्याएं आ सकती हैं जिसके फलस्वरूप आपका दैनिक जीवन अव्यवस्थित हो सकता है।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आप अपनी शिक्षा जारी रखेंगे और साहित्य अथवा ज्योतिष में रुचि हो सकती है।

अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
(26/11/2025 - 16/05/2026)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 26/11/2025 को प्रारंभ होकर 16/07/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 26/11/2025 को प्रारंभ होकर 16/05/2026 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मपत्रिका में चंद्रमा छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, तीमारदारी, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। चंद्रमा मन का कारक है। छठे भाव में इसकी स्थिति के कारण यह अवधि अशुभ हो सकती है। उच्चाधिकारियों, सहकर्मियों और मातहतों के साथ संबंध कटु हो सकते हैं। चंद्र अगर उच्च का या शुभ हो, तो हानि कम होगी। कार्यक्षेत्र में गड़बड़ी या कुप्रबंधन का प्रसार संभव है; धनहानि भी हो सकती है। मष्तिष्क और यकृत की शक्ति कम हो सकती है।

खानपान कर नियंत्रण रखें। मष्तिष्क को सबल बनाने के लिए चांदी की अंगूठी में जड़ा 5 रत्ती का मोती कनिष्ठिका में दायें हाथ में, सोमवार को प्रातःकाल दूध से धोकर, चंद्र मंत्र का 11 बार उच्चारण करने के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
(16/05/2026 - 15/12/2026)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 26/11/2025 को प्रारंभ होकर 16/07/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 16/05/2026 को प्रारंभ होकर 15/12/2026 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर मंगल कुंडली में 7, 10, 11 भावों पर दृष्टिपात कर रहा है।

इस अंतर्दशा की अवधि में घरेलू सुखों में कमी आ सकती है; माता से विवाद हो सकता है। मित्रों और रिश्तेदारों से भी संबंध बिगड़ सकते हैं।

आपका निवास जन्मस्थान से दूर हो सकता है। वाहनसुख मिलेगा। खेती से आय में वृद्धि होगी, राजनीति में सफलता मिलेगी। इस अवधि में मकान बना सकते हैं। अरिष्ट से बचाव के लिए भौम वेदिक मंत्र के 10,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - राहु
(15/12/2026 - 15/06/2028)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 26/11/2025 को प्रारंभ हुई और 16/07/2035 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18

मास रहेगी। आपके लिए यह 15/12/2026 को प्रारंभ होकर 15/06/2028 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है जो अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अवधि में आप स्वादिष्ट भोजन ग्रहण करेंगे। चरित्र पर नियंत्रण आवश्यक है क्योंकि आप विदेशियों या निम्न चरित्र के व्यक्तियों से संबंध स्थापित कर सकते हैं। स्वादिष्ट भोजन के कारण मधुमेह हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - गुरु
(15/06/2028 - 15/10/2029)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 26/11/2025 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 15/06/2028 को प्रारंभ होकर 15/10/2029 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर बृहस्पति कुंडली के 4, 6, 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके शुभत्व में वृद्धि कर रहा हैं

इस अवधि में आपकी धर्म में रुचि घट सकती है। दुराचार और वासनापूर्ण जीवन से बचें। सुख-सुविधाओं, वाहन, वस्त्र, आभूषण आदि के लिए आपका आकर्षण तीव्र होगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 (रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में गुरुवार के दिन प्रातःकाल दायें हाथ की तर्जनी में कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, बृहस्पति के मंत्र के 99 जाप करने के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शनि
(15/10/2029 - 16/05/2031)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 26/11/2025 को प्रारंभ हुई और 16/07/2035 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 15/10/2029 को प्रारंभ होकर 16/05/2031 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्धटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। शनि

आयुष्कारक है। इसके अष्टम भाव में स्थित होने से आपकी आयु लंबी रहेगी। अष्टम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 10, 2, 5 भावों पर दृष्टि द्वारा अपना प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आप उत्तरदायित्वों का निर्वाह धैर्य और परिश्रम द्वारा सभी बाधाओं को पार करने के बाद करेंगे। नेत्र और श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। ईमानदारी और दयाभाव बनाए रखें।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी की अंगूठी में नौमुखी रुद्राक्ष को शनिवार के दिन शिवजी की पूजा करने के बाद शनि के वैदिक मंत्र का जाप करते हुए धारण करें।

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com